IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

नदियों की सांस्कृतिक समृद्धि

डॉ.मोना

इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग

देव संस्कृति विश्वविद्यालय

सारांश

प्रकृति पंच तत्वों से मिलकर बनी है क्षितिज, जल, पवन, गगन, और समीर सभी का अस्तित्व हमारे जीवन में अकथनीय है उसी में एक तत्त्व है,जल तथा जल की उपयोगिता को समझने के लिए जल के प्राकृतिक सोत्र नदियों की बात करनी होगी, और साथ ही नदियों के सांस्कृतिक स्वरुप और समृद्धि के लिए भी हमे नदियों के विभिन्न आयामों को समझाना होगा | नदिया धरती का अभिसिंचन करती है प्राकृतिक जल का बड़ा स्रोत है इससे कही आगे तक नदियों की महानता है तथा हमारी संस्कृति में नदियों की सांस्कृतिक समृद्धि वर्णित है क्यकि नदी केवल एक जल भराव का केंद्र या,स्थान नहीं है बल्कि वह अपने साथ पूरी संस्कृति को संचारित करती है अपने उद्गम स्थल से लेकर विलय स्तर तक नदी चारो और केवल जल का बहाव लेकर ही नहीं चलती वरन उसके साथ बस्तियाँ, वृक्ष ,वनस्पति ,संस्कार ,समृद्धि ,पवित्र आस्था, दानपुण्य व् परम्पराये भी साकार होती दिखाई देती है| नदियों के इसी स्वरुप को हम सांस्कृतिक समृद्धि के रूप में देखते है|

कूट शब्द नदी ,सांस्कृतिक, अभिसिंचन ,समृद्धि

प्रस्तावना

पूरे इतिहास में नदियों ने समाज के सांस्कृतिक ताने-बाने को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने अपने किनारे रहने वाले समुदायों के लिए आजीविका, परिवहन और भरण-पोषण का एक स्रोत प्रदान किया है।, नदियों का कई संस्कृतियों के लिए गहरा आध्यात्मिक और धार्मिक महत्व रहा है। उन्हें पवित्रता के रूप में सम्मानित किया गया है धार्मिक अनुष्ठानों, समारोहों और तीर्थयात्राओं के लिए नदियों ने स्थलों के रूप में स्वयं को नामित किया है

नदियों का सांस्कृतिक महत्व उनके व्यावहारिक महत्व से कहीं अधिक है। नदियों ने कलात्मक अभिव्यक्ति, लोककथाओं और कहानी कहने को प्रेरित किया है। वे कविता, पेंटिंग और संगीत का विषय रही हैं, नदिया कल्पना को साकार करती हैं और किसी विशेष स्थान की सांस्कृतिक पहचान को दर्शाती हैं।

नदियों ताल सरोवर कुआँ बावड़ी झील झरना इत्यादि जल के सोत्र है एवं सभी किसी न किसी प्रकार से जीवन से गहरे जुड़े है सभी की आवस्यकता है,एवं इनके बिना जीवन की एक पल भी कल्पना असंभव है, परन्तु हमारी संस्कृति में नदियों को विशेष दर्जा दिया गया है |नदियों की सांस्कृतिक समृद्धि से तात्पर्य है कि ,नदियाँ अपने साथ एक जीवंत समाज ले कर चलती है, नदियों की भूमिका सदैव से भारतीय संस्कृति में सम्मान आस्था व जल के पवित्र स्तोत्र के रूप में रही है| नदियों के सांस्कृतिक महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता, क्योंकि उन्होंने समाज को आकार देने, आजीविका, परिवहन, जीविका प्रदान करने ,धार्मिक अनुष्ठानों और समारोहों के लिए विशेष भूमिका के रूप है। अनेक संस्कृतियों का समागम नदियों के किनारे होता है नदियों के किनारे हमारे देश की बसी हुए बस्तियाँ इस बात की द्योतक है कि नदियों का उनके जीवन के साथ गहरा जुडाव व लगाव है नदियों किनारे रहने वाले निवासी स्वयं की अनेक जरूरतें जैसे जल के लिए, संस्कारो के लिए ,पालन पोषण

के केलिए ,आर्थिक सहारे के लिए उन पर निर्भर है यही कारण है की इन्हे हमारी संस्कृति में माता कहा गया है जो कि जो पुरे समाज का सभी तरह से पालन पोषण करती है उन्होंने न केवल आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराए हैं, बल्कि शक्ति, प्रेरणा और प्रकृति से जुड़ाव के प्रतीक के रूप में भी काम किया हैं, नदियाँ किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करती ,इनके सदैव देने के भाव से इन्हे सदा नीरा भी कहा गया है| इनके साथ कुल, समाज व राष्ट्र भी गौरवान्वित होता है जब नदियाँ स्वयं के सांस्कृतिक स्वरुप से सभी का अभिसिंचन करती है|इनके बिना समाज की कल्पना भी असंभव है, नदियों के विभिन्न आवरण दिखाई देते है जिनके साथ नदियाँ अपनी यात्रा को अविरल पूर्ण करती है|

भौगोलिक स्वरुप

नदियों की अपनी भौगोलिक अवस्था भी महत्वपूर्ण है भौगोलिक स्वरुप के आधार पर भी नदियों के वर्गीकरण मिलते है वे अपनी दिशा एवं स्थान के आधार पर भी नामित होती है| उत्पत्ति, प्रकृति एवं स्वरुप के आधार पर भारत की नदियाँ दो भागो में विभाजित है|

1-----हिमालयी नदियाँ

2----प्राय द्वीपीय नदियाँ

हिमालयी नदियाँ --हिमानियों में उद्गम सोत्र होने के कारण हिमालयी नदियाँ

सदा बहार है, इन्हे चार भागो में विभाजित किया गया है|

I--पूर्वी हिमालयी ---सिंधू ,सतलज,बह्मपुत्र

II---निम्न हिमालयी ---व्यास,रावी,चिनाव

III---शिवालिक नदियाँ –हिंडन,सोलानी

IV----महान हिमालयी नदियाँ --गंगा,काली,घागरा,गंड़क,तीस्ता

प्राय द्वीपीय नदियाँ -यह हिमालयी नदियों से अधिक प्राचीन है, इसलिए अधिकांशतः मौसमी है,एवं वर्षा पर निर्भर है|इन्हे दो भागो में विभाजित किया गया है [1] I---पूर्वी प्रभाव वाली नदियाँ

II---पश्चिमी प्रवाह वाली नदियाँ

भारतीय संस्कृति में नदियों के प्रति सांस्कृतिक आस्था

आर्ष ग्रंथो में नदियों के सूक्त व स्तुति का अनेको जगह उल्लेख मिलता है| ऋग्वेद मे नदियों का वर्णन एवं उसके साथ जुडी मनुष्य की आस्थाओ परभी ऋचाएँ वर्णित है | उत्तरवैदिक कालीन महाकाव्य काल में भी नदियों की व जल की स्तुति का वर्णन मिलता है|

सौम्य यह शीतल और पावन जल वाली अलकनंदा बह रही है ,यह बद्रिकाश्रम से निकलती है देवर्षिगण इसका सेवन करते है, आकाशचारी, बालखिलाय ,और गन्धर्व गण इसके तट पर रहते है |यहाँ मारीचि, पुलह, भृगु ,और अंगिरा आदि मुनि गण शुद्ध स्वर से सामगान किया करते है | [2]

किया है भगवान शिव की जटाओ में गंगा विराजमान है उन्होंने जटाओ में इन्हे धारण किया है, तुम सभी विशुद्ध भाव से इस भागीरथी के पास पास जाकर प्रणाम करो |

वैदिक काल में सिंधु और सरस्वती का यशोगान था| उन्ही के तट पर आर्यों की बस्तियाँ थी, और ऋषियो के तपोवन थे, सरस्वती सप्त सिंधु की सबसे ऊपरी धारा होने के कारण सबसे प्रथम है |सरस्वती के तट वर्ती क्षेत्रो में ही वेद और ब्राह्मण ग्रंथो की रचना हुई है, सरस्वती वेदो की मुख्य नदी है, और अलकनंदा सहायक है ,दोनों मिलकर गंगा कहलाती है ,इसलिए ऋग्वेद मेंसबसे अधिक बार सरस्वती नदी का उल्लेख किया गया है, क्योकि सबकी माता सरस्वती है|प्राचीन भारत में नदियों को माता कहा गया जैसे कि, ऋग्वेदिक काल में सरस्वती नदी को देवी कहा है, एवं वह ईश्वर तुल्य मानी जाती थी | सिंधु नदी के लिए भी साहित्यिक अभिवयक्ति मिलती है

सीधी जाने वाली, अनेक रंगों वाली, चमकती हुई हानि न पहुँचाने वाली, चुस्तों में सर्वाधिक चुस्त सिन्धु (बहने वाली, नदी, उदक -ऊर्जा) विकास से स्थिर ऊर्जाओं को सर्वतः गतिशीलताओं से पूर्ण करती है रंगबिरंगी किरणों की भांति सुन्दरी नारी के तुल्य दिखलाई देती हैं|[3] वेदोत्तर काल में गंगा को मातृ देवी कहा गया, पृथ्वी व जल दोनों से वनस्पति व पशुओ का सम्पोषण होता था, इसलिए इन्हे माता का दर्जा दिया गया तथा ऐसी परंपरा आज भी विधमान है |

महाकाव्य काल में उल्लेख मिलता है कि,राजा सगर के यज्ञ का अश्व समुद्र के किनारे कही खो गया था, उसे ढूढने के लिए राजा सगर के 60000 पुत्रो ने समुद्र के एक भाग को खोद डाला और अंत में उन्हें कपिल के आश्रम में वह घोडा दिखाई दिया उन्होंने कपिल मुनि का अनादर किया अनादर करने के कारण वे श्राप वश कपिल के नेत्रों की अग्नि से भस्म हो गए, तत्पश्चात पुर वासियो के कहने पर राजा सगर का पौत्र अंशुमान मुनि कपिल के आश्रम गया और उन्हें प्रसन्न करके अश्व का घोड़ा प्राप्त किया जिससे सगर का यज्ञ पूर्ण हुआ| भागीरथ ने पूर्वजो के उद्धार के लिए देव नदी गंगा से पृथ्वी पर आने की प्रार्थना की, गंगा आकाश से भूतल पर आई और उन्होंने भगीरथ से कहा महाराज में पृथ्वी पर आई हूँ, मुझे मार्ग दिखाइए ! यह सुनकर भगीरथ गंगा को समुद्र तक ले कर गए और गंगा ने पाँच सो नदियों की सहायता से समुद्र को भर दिया |[4] ऋग्वैदिक कालीन जन निवास हेतू नदियों के किनारे की भूमि का चयन करते थे, जिससे शीतल जल प्राप्त हो और साधना के लिए भी नदियों के आसपास का पवित्र वातावरण उपलब्ध हो जाये, ऋग्वेदिक जन नदी किनारे चरागाह ,जलसोत्र या सिंचित जमींन की तलाश में रहते थे |नदियों की धाराएँ बदलती थी जिसके फलस्वरूप लोगो को भी अपने ठिकाने बदलने पड़ते थे और ये ठिकाने नदियों के समानांतर ही होते थे [5] 2 नदियों के किनारे मानव बस्तियों का इतिहास नवपाषाण काल से भी मिलता है में जब का उल्लेख होता है तब वे बस्तिया भी नदी किनारे ही बसी होती थी ,नदियों द्वारा कही कही पर्वतो द्वार घिरा हुआ डेल्टा या पठार भी होता था | इन्ही पठारों और डेल्टाओं के द्वारा नदियों के भौगोलिक स्वरूप के कारण प्रत्येक प्रदेश की एक राजनैतिक इकाई व प्रशासनिक इकाई भी निर्धारित होती थी|

सातवाहन नरेशों ने स्वयं को दक्षिणापथपति कहा है, क्योकि नर्मदा नदी की इस उत्तरी सीमा के साथ तीनो और समुद्र से घिरा समूचा प्रायद्वीप दक्षिणापथ कहलाता है | सातवाहन शासको ने स्वयं को ईसा की तृतीय सदी के मध्यकाल तक दक्षिणापथपति कहा है | नरेश सातकर्णी सिमुक को दक्षिणापथ पति कहा गया है [6]

ऋग्वैदिक कालीन इतिहास में आर्यों के लिए अनेक विचारो का वर्णन मिलता है | ऋग्वेद के रचियता द्वारा जातियों के सम्बन्ध में उल्लेख मिलता है कि, ऋग्वेद की रचना आर्य जाति की उन शाखाओ ने की जो प्रायः गँगा यमुना से चलकर पश्चिम की और फैली थी और इनकी राजनैतिक और सांस्कृतिक पोषण का केंद्र सरस्वती नदी हो गई थी [7]

नदियों ने राजनैतिक व सांस्कृतिक सीमाओं को जोड़ने का कार्य भी किया है | उदहारण स्वरुप उड़िसा का समुद्री तटि प्रदेश जो कलिंग कहलाता था, इसकी उत्तरी सीमा महानदी थी और दक्षिणी सीमा गोदावरी कहलाती थी |

सिंधु सभ्यता काल की इतनी विशाल ,सुव्यवस्थित, व अद्भुत सभ्यता का पूरा निर्माण व सरंचना सिंध नदी के किनारे होने से उसका नामकरण ही सिंधु सभ्यता के नाम पर उल्लेखित है |लगभग 2500 ई पू नदियों के मार्गो में दिशा परिवर्तन होने से मानव बस्तियों पर गहरा प्रभाव पड़ा | घाघर - हकरा की समरूपा नदी सरस्वती, यमुना ,और सतलज से मिल गई और तीनो ने मिलकर हड़प्पा संस्कृति और विकास में योगदान दिया |1700 ई पू में सतलज और यमुना पूर्व की और बढ़ गए इसका हड़प्पा संस्कृति की बस्तियों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा | नदियों के किनारे अवस्थित मनुष्य के अनेक प्रकार के धार्मिक व आस्तिक क्रियाकलाप की मार्गदर्शिका नदी ही होती है| घाटों पर निवासित मनुष्यो के लिए नदियाँ उपासना, साधना,आराधना का प्रमुख केंद्र होती है, वे प्रातः कालीन उपासना का नियमित क्रम नदियोंके किनारे पर ही समपन्न करते है उनके जीवन में यह कर्मकांड सहजता से जीवन के आरम्भ में ही जुड़ जाता है, और उनके जीवन के 16 संस्कारो की क्रिया विधि भी वही होती है

नदियों के सामाजिक आर्थिक सोपान

नदियों के आसपास एक सुन्दर सामाजिक तानबाना नदियाँ स्वयं ही बुनती है, जो कि समाज में सभी प्रकारकी व्यवस्था का निर्माण करता है | समाज की अनेको सम्भावनो को साकार नदियाँ करती है | समाज के लिए नदियाँ मेरुदंड का कार्य करती है, एवं उसके किनारे बसे मनुष्यो को नदियों से सभी आवशयक पोषण प्राप्त होते है |

नदियाँ आर्थिक रूप से भी मनुष्य को, परिवार को समाज को, व राष्ट्र को सशक्त बनाती है

गँगा सिँधु सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्मदा कावेरी सरयू तनया कुर्वन्तो नो मङ्गलम हम नित्य स्नान के समय नदियों का स्मरण करते हुए राष्ट्रीय एकता का अनुभव करते है [8] जीविकोपार्जन के लिए अनेको अवसर उपलब्ध कराती है| नदियों के किनारे कितने ही प्रकार के व्यक्साय फलीभूत होते है जैसे मतस्य पालन, सीपी, रत्न ,व मोतियों का व्यापर इत्यादि अनेको निर्माण सम्बन्धी सामग्री जैसे बजरी, मिट्टी, रेत ,पत्थर बालू इत्यादि सभी सामग्री उनके जीविकोपार्जन का सशक्त सहारा बनती है यहाँ से अनेक प्रकार के क्रय विक्रय स्थानीय निवासियों द्वारा किये जाते है| गंगा घाटी के साथ पूर्व की और की भूमि साफ हो जाने से गंगा नदी प्राकतिक रूप से व्यापर का मुख्य मार्ग बन गई और उसके किनारे पर बसी अनेक बस्तियाँ क्रय विक्रय का केंद्र बन गई [9]

प्राचीन काल से ही विहार के लिए शांत एवं उचित स्थान का चयन करने की परंपरा रही है, निवास के लिए नदियों के निकट के क्षेत्रो को तरहीज दी जाती थी | इस तरह के स्थल द्वितीय सहस्त्राब्दी ई.पूर्व, में भी मिलते है |

नदियाँ आर्थिक रूप से समाज का पालन पोषण करती है, एवं अनेको प्रकार के व्यापर उपलब्ध कराती है समाज के आर्थिक संसाधन के लिए वे सदैव तैयार रहती है |

नदियों का यातायात के साथ महत्वपूर्ण सम्बन्ध प्राचीन काल से ही रह है, जब आवागमन के साधन नहीं थे तब इन्ही जलमार्गो का उपयोग किया जाता था , इनके द्वार आवश्यक सामग्री का आदान प्रदान अन्य देशों के साथ एवं स्थानीय स्तर पर भी किया जाता था वर्तमान में भी हम देखते है कि अनेक स्थान पर यातायत के लिए नौकायन या स्टीमर का सहयोग लिया जाता है

भारत सरकार द्वार 13 जनवरी 2023 को दुनिया की सबसे लंबी नदी क्रूज का शुभारंभ किया गया जो वाराणसी से असम के डिब्रूगढ़ तक बांग्लादेश के माध्यम से यात्रा करेगा यह एकल नदी जहाज द्वारा सबसे बड़ी एकल नदी यात्रा है इसे 'गंगा विलास क्रूज' नाम दिया गया है, 50 दिनों में गंगा-भागीरथी-हुगली, ब्रह्मपुत्र और वेस्ट कोस्ट नहर सहित 27 नदी प्रणालियों के साथ 4000 किलोमीटर की दूरी तय करेगा।

व्यापार व्यवसाय केलिए जल मार्ग का उपयोग बेहतर था | नदियाँ वाणिज्य और संचार की मानो धमनियाँ थी प्राचीन काल में सड़क बनाना कठिन था इसलिए आदमियों व वस्तुओ का आवगमन नावों से होता था नदी मार्ग श्रोणिक व वाणिज्य संचार के लिए अत्यंत लाभकारी थे [10]

सांस्कृतिक संगम का केंद्र नदियों को कहते है क्योकि अनेक संस्कृति कर्मी नदियों किनारे मिलते है एवं उनके मिलन से संस्कृति नवीन स्वरुप धारण करती है, तथा संस्कृति के सभी आयाम वहाँ बिखर जाते है | उदाहरण वर्ष 643 ई. में हर्ष के द्वारा कन्नौज में गंगा नदी के तट पर एक विशाल धार्मिक सभा का आयोजन किया। सभा का मुख्य उद्देश्य बुद्ध की शिक्षाओं पर प्रकाश डालना था।कन्नौज सभा के बाद उसी वर्ष प्रयाग में एक सभा का आयोजन किया गया इसे महा मोक्ष परिषद के नाम से जाना जाता था।हर्षवर्धन के द्वारा इसका आयोजन प्रत्येक पाँच वर्ष में किया जाता था एवं इसका उद्देश्य राजकोष के संग्रहित धन को जरूरतमंद प्रजा को बांटना था |नदियाँ धार्मिक आस्था का सबसे प्रबल माधयम है, क्योंकि हमारी संस्कृति में ऋषियों व मनीषियों द्वारा सभी प्रकार के दान, दक्षिणा,व पुण्य के कार्यो को नदी के साथ अनिवार्य कर दिया किसी भी पर्व ,त्यौहार या दिवस के अवसर पर नदियो के किनारे स्नान के साथ ही दान भी अनियार्य अंग था और यही कारण है कि भारतीय संस्कृति में सभी पवित्र नदियों के किनारे प्राचीन काल से ही जप,दान व ध्यान की अक्षुण्ण परम्परा रही है,जो आज भी यथावत है | भारतीय संस्कृति में अनेक प्रकार के पर्व व स्नान का उल्लेख मिलता है जैसे कुभं स्नान, पूर्णिमा स्नान, मकर संक्राति स्नान, गंगा दशहरा तथा छठ पुजन जैसे अनेक पर्व,त्यौहार नदियों के साथ मनाने का कारण यही था| जिसके पीछे भाव यह था कि इस अवसर पर स्नान के साथ दान व संस्कृति का भी संरक्षण हो सके |कृषि व सिंचाई की बात करे तो नदियाँ कृषि के लिए वरदान रही है क्योंकि, वर्षा के पश्चात खेतों के पोषण व सिंचाई की पुरी जिम्मेदारी नदियों पर होती है, अपने जल से नदियाँ सदैव खेतों में पानी की कमी नहीं रहने देती है जिससे खेतों की फसले सूखती नहीं एवं सही समय पर उत्पादित होती है खेतो को नदियों से पानी लगातार प्राप्त होता है, क्योंकि हम सभी जानते है कि हमारी अर्थव्यस्था का एक बड़ा भाग खेती से पूर्ण होता है | तथा नदियाँ उसके लिए सदैव से ही बेहतर भूमिका निभाती है|

दक्षिण भारतीय संस्कृति की कृषि का आधार भी नदियाँ ही रही है | दक्षिण भारतीय कावेरी नदी के दोनों किनारे और उसका डेल्टा वाला क्षेत्र ही उसके मूल रहे हुए ही प्रतीत होते है, ये नदिया जाल के स्वरुप में फैलती है तथा यह समृद्धि प्रमुख भूमिका निभाती है [11]

सांस्कृतिक समृधि के सभी सभी पैमानों को नदियों के साथ जीवंत प्रतिमान के रूप में देखा जा सकता है ,क्योकि नदी जहाँ से उद्गमित होती है वहाँ के सभी निवासियों को सकारात्मकता तथा ऊर्जा का सतत प्रवाह भी देती है नदियों की नीरवता, चंचलता, तथा पवित्र प्रवाह उसके किनारे

बसे निवासियों को लगातार सकारात्मक ऊर्जा का एहसास देता है, यही कारण है कि नदी अपने साथ सांस्कृतिक समृद्धिको बिखेरती हुए चलती है |

ऋग्वेद के दसवे मंडल में मनु पर्वतो के देवो ,एवं नदी के सुखो के साथ विष्णु के सत्संग सुख की कामना करते है ऋग्वेदमें उल्लेख है कि इंद्र नौका द्वार(900) नदियों को पार कर गए [12]|

नदियों की स्तुति का उल्लेख आर्ष ग्रंथो में मिलता है ऋग्वेद(में नदियों(99) के नाम का कीर्तन किया गया है [13] आर्यो के द्वारा भी पवित्र स्थलों की स्थापना एवं मंत्रो की उपासना के लिए नदियों के तट का ही उपयोग किया जाता था आर्य इन्ही देव नदियों के पवित्र संगम स्थळ पर प्राचीन काल से अनेक वेद मंत्रो और पांच प्रयागो की स्थापना की पुष्टि करते है [14]

नदियाँ समय समय पर वर्षा की अधिकता व कमी के कारण अपनी धारा को बदलती है तथा इसका लाभ यह होता है कि जब नदियाँ दिशा बदलती है तब वह खेती के लिए उपलब्ध हो जाती है जो मिट्टी नदी का पानी सूखने के पश्चात बचती है उसकी उर्वर क्षमता अन्य मिट्टी की तुलना में बेहतर होती है वह अनेक प्रकार के गुणों से युक्ता होती है जिससे किसान को उर्वर व उपजाऊ मिटटी की व्यवस्था नहीं करनी पड़ती तथा जब नदियों में पानी की अधिकता होती है तब उसमे वह फसल किसान उपजता है जिसके लिए लगातार पानी की आवयश्कता है अतः नदी दोनों ही मौसम में किसान को मदद करती है नदियों के बहाव से अनेक प्रकार के वृक्ष वनस्पति पौधे भी आ जाते है,जो किनारे बसे निवासियों की ईधन की आवश्यक्ता पूर्ण करते है|

नदियाँ साहसिक पर्यटन लिए भी उपयोगी है अनेक स्थान पर नदियों के किनारे इस पर्यटन को विकसित किया गया है इसके द्वारा वहाँ की आबादी को रोजगार मिलता है| ऋषिकेश में गंगाकिनारे मरीन ड्राइव से मुनि की रेती तक गंगा नदी में राफ़्टिंफ कराई जाती है 15 नदियों के साथ जो वनस्पति विकसित होती है उस स्थान के इकोसिस्टम को वह संतुलित करती है तथा उन वनस्पतियो के कारण नदियों के आसपास का इकोसिस्टम संतुलित रहता है

निष्कर्ष नदियों की सांस्कृतिक समृद्धि के अनेको आयाम है कुछ इस शोध पत्र के द्वारा स्पष्ट किए गए है| नदियों की सांस्कृतिकता अनवरत रहती है ,एवं संस्कृति में नदियों के दर्शन मात्र से मोक्ष की प्राप्ति का उल्लेख किया गया है

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु॥

गंगा स्नान से,यमुना पानसे,नर्मदा दर्शन, से और तापी के स्मरण मात्र से हमें पापो से मुक्ति मिलती है |

नदियों के जल में आचमन से,दीपदान द्वारा व अन्य क्रिया कलापो के द्वारा सभी मनुषय की उन्नति,प्रगति, व संतुष्टि का उल्लेख भारतीय संस्कृति में किया गया है | आवश्यक्ता है, इन नदियों के प्रति संकल्पित होने की तथा इन्हे पुनः सदानीरा बनाने की नमामि गङ्गे जैसे अभियान एवं सम्बंधित परियोजनाएं स्थानीय स्तर पर जो, नदियाँ है उनके लिए की जा सकती है|

जनमानस को जाग्रत होने की जरुरत है कि, इन नदियों से ही हमारा अस्तित्व व संस्कृति जुडी हुई है, इसलिए इन्हे वही सम्मान दे जो आर्ष ग्रंथो में उल्लेखित है |

हर भारतीय अपनी जिम्मेदारी समझ ले और नदियों के प्रति माता का का भाव रखे तो यह संभव है क्योकि हम केवल माता मानते है जब हम अन्तः करण से स्वीकार करेंगे तो बहुत आसानी से नदियों की दशा बदली जा सकती है | आने वाली पीढ़ियों को हम विरासत में नाला देना चाहते है या पवित्र स्वच्छ सदानीरा जीवनदायनी नदिया तय हमे करना है | जल ही जीवन है रहीम ने भी कहा है रहिमन पानी राखिये बिन पानी सब सून पानी गए न उबरे मोती, मानुष, चून |

नदियों की महत्ता साहित्य में भी बखूबी मिलती परन्तु जरुरत है,उसके सांस्कृतिक दृष्टिकोण को समझने की और वर्तमान में उसके संरक्षण के लिए आगे बढ़ने की |

सन्दर्भ ग्रंथ

1 स्प्रेक्ट्रम,भारत का भूगोल. p-36-40 spraktram private limited 2011

2 महाभारत वनपर्व(145/39)

3 ऋग्वैद 10:75:1-9

4 भारत सावित्री p.240 वासुदेव शरण अग्रवाल सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन 2011

5 आर्य सरंचना का पुनर्गठन p-90 रोमिला थापर अनुवादक आदित्य नारायण सिंह हिंदी माधयम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली प्रथम संसकरण 2011

6 भारतीय सिक्को का इतिहास p. 111 गुणाकर मुले राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली first edition 2010

7 आर्यो का अदि निवास मध्य हिमालय p.91 भजन सिंह भजन भागीरथी प्रकाशन गृह टिहरी संवत2054(1997)

8 श्री सम्पूर्णानन्द अभिनँदन ग्रँथ p.115 बनारसी दास चतुर्वेदी नगरी प्रचारिणी सभा काशी

9 भारत का इतिहास p.30 रोमिला थापर राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली third edition 2018

10 प्ररम्भिक भारत का परिचय -रामशरण शर्मा p.33 orient black swan private limited new delhi 2011

11 प्राचीन भारत की आर्थिक संस्कृति p-115डॉ.विशुद्धानन्द पाठक उत्तरप्रदेश हिंदी संसथान लखनऊ प्रथम संसकरण 2005

12 ऋग्वेद(1/121/3)

13 ऋग्वेद (1/191/13)

14 आर्यो का अदि निवास मध्य हिमालय p.88 भजन सिंह भजन भरिरथी प्रकाशन गृह टिहरी संवत2054(1997)

15 Jagran News Sat, 16 Sep 2023